Scanned by CamScanner

❀ श्रीमते भगवते श्रीरामानन्दाचार्याय नमः ❀

श्रीयुगल रहस्य माधुरी विलास

प्रथम भाग

लेखक--
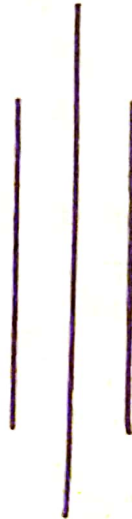
श्रीमद्अग्रदेवाचार्य वंशावतंश अनन्त श्रीजानकीशरणजी

महाराज मधु[illegible] [illegible]चरणारविन्द भ्रमर

" सीता शरण "

श्री तुलसी साहित्य प्रकाशन मण्डल, रामकोट

श्रीअयोध्याजी ।

श्री श्रीसीताराम श्रीसीताराम श्रीसीताराम श्री

श्री मैथिली रमणो विजयते

श्रीमत्यै सर्वेश्वर्यै श्रीचारुशीलायै नमः

श्रीमन्मारुतनन्दनाय नमः

श्रीमते भगवते श्रीरामानन्दाचार्याय नमः

श्री सद्गुरवे नम

श्री युगल रहस्य माधुरी विलास

प्रथम भाग

लेखकः–श्रीमद्अग्रदेवाचार्य वंशावतंश

अनन्त श्री जानकी शरण जी महाराज मधुकर

तच्चरणारविन्द भ्रमर **'सीताशरण'**

प्रकाशकः–श्रीविदेह नन्दिनी शरणजी

अध्यक्ष–श्री तुलसी साहित्य प्रकाशन मण्डल

श्री रामकोट, श्री अवध धाम

(श्रीरामानन्दाचार्य जयन्ती के पावन पर्व पर)

प्रथमावृत्ति–१००० न्यौछावर–२१)रु०

[सम्वत् २०४५ सन् १९८९ ई०]

श्री श्रीसीताराम श्रीसीताराम श्रीसीताराम श्री

* विनम्र निवेदन *

श्रीयुगलकिशोर चितचोर जू के कृपा पात्र रसिक भक्तों के समक्ष श्रीयुगल रहस्य माधुरी विलास प्रस्तुत है। इस ग्रन्थ का आधार श्रीमद्व्यास भगवान कृत वृहद्ब्रह्म रामायण अन्तर्गत श्री कोशल खण्ड है : जिसको विक्रम सम्वत २००१ में रसिक महानुभाव ने प्रकाशित कर दिया था, उसी मूल ग्रन्थ के आधार से श्री सद्गुरु कृपा ने मुझ अबोध से हिन्दी भाषा में छन्दानुवाद करा लिया, यद्यपि अपने राम को छन्द प्रबन्ध का कुछ भी ज्ञान नहीं है, तथापि कर्तुं अकर्तुं समर्थ प्रभु को कोई भी कार्य किसी से करा लेना असम्भव नहीं है। "मस कहि करै विरंचि प्रभु, अजहि मसक ते हीन ।। जेहि पर कृपा करहिं जन जाना। कवि उर अजिर नचावें बानी ।। के ही सिद्धान्त से रसिक चक्र चूड़ामणि श्रीराघवेन्द्र सरकार ने अपने भक्तों के सुखार्थ यह सेवा इस दीन से सम्पन्न करवाई है। भले ही कोई अभिमान करे कि मैंने यह कार्य किया, अथवा ऐसा कार्य करूँगा। परन्तु सभी कार्यों के करता कारयिता स्वयं प्रभु ही हैं। वह अपनी प्रेरणा द्वारा किसी भी जीव से कोई भी कार्य करा लेते हैं। उसी प्रकार अपने राम तो साहित्य दृष्टि से अबोध हैं। ग्रन्थ की काव्य रचना तथा प्रकाशन कार्य प्रभु की कृपा से ही सम्पन्न हो रहा है।

प्रस्तुत ग्रन्थ पन्द्रह अध्यायों में है, जिसमें से प्रभु विधान बस इस प्रथम भाग में मात्र चार अध्याय का ही प्रकाशन हो रहा है, पूर्ण ग्रन्थ का एक साथ प्रकाशन होने पर कलेवर बड़ा हो जायेगा। प्राप्त कर्ताओं को प्राप्त करने में व्यविधान तथा ग्रन्थ को साथ लेकर यात्रा में बाधा होगी। प्रेमीभक्त

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

नित्य पठनीय पुस्तक को अपने साथ रखते हैं। ग्रन्थ के प्रथम अध्याय में श्री सरयू तट में विविध वनो उपवनों में अपने सखा अनुज सेवकों के साथ रास लीलाका रसास्वादन किया, तथा उनको रास रसका समास्वादन कराया, दूसरे अध्याय में रसिक शिरोमणि श्रीराघवेन्द्र की अलौकिक सुषमा को देख परमाकृष्ट होकर गोप कन्याओं ने भगवान शिव की आराधना कर प्रसन्न करके रसिक शिरताज श्रीरघुराज को पति रूप में प्राप्त होने का वरदार प्राप्त कर लिया उन गोप कन्याओं की भावना से भावित होकर भक्त मनरंजन् प्रभु ने भी पिताजो से आज्ञा लेकर एक माह तक श्रीसरयू तट पर भूतमन भावन भगवान श्री शंकर जी की आराधना करने की लीला की, जिससे प्रभावित होकर श्रीउमापतिने प्रगट होकर दर्शन देकर निवेदन किया कि मैं आपका कौन सा प्रिय कार्य करूँ। प्रेम रस लम्पट प्रभु ने गोप कन्याओं से संयोग होने का संयोग बनाने का संकेत किया। उमानाथ ने अपने गणों द्वारा विधान बना दिया जिससे रसिक रँगीले सरकारसे गोपकन्याओं का मिलन तथा रास, रसका रसास्वादन पूर्वक विविध प्रकार के विहार करने का समय प्राप्त हुआ। पुनः पिता जी की आज्ञा से सखा भाई सेवकों के साथ कर लेने के बहाने से गोपों के गोठ में पधारे वहाँ गोपों ने पूजन स्वागत करके हजारों की संख्या में अपनी अपनी कन्यायें अर्पण की, उनको लेकर रास रस रसिया प्रभु नगर में पधारे पिताजी की आज्ञासे उन कन्यायों को सरयू किनारे मणिमय महल बनवा कर रख दिया, इनके साथ नित्यरास विलास का अनुभव करते कराते रहे।

तीसरे अध्याय में श्री सरयू तट में विहार करते समय

तथा श्रीब्रह्मा जी की आज्ञा से उनकी स्वीकृति किये, जिसे सुनकर देवताओं का क्रोध करना, पुनः ब्रह्माजी के समझाने पर देवताओं द्वारा देवकन्यायों का समर्पण, पुनः पिता जी की आज्ञा से सम्बरासुर पर आक्रमण कर कई हजार कन्यायों को बन्दीगृह से मुक्त करना, पश्चात उनकी प्रार्थना पर उन सबको स्वीकार करके श्रीअवध आकर पिता की आज्ञा से उन कन्यायों को भी गोप कन्याओं के साथ निवास दिया ।

चौथे अध्याय में गोपकन्या, देवकन्या तथा राजकन्यायों के साथ अनेक प्रकार के विहार का वर्णन है ।

उमा दारु जोषित की नाईं ।
सवहिं नचावत राम गोसाईं ।।

सभी चेतन कठपुतलीवत हैं, उनके सूत्रधर रसिकेश्वर श्रीरामजी हैं, तदनुसार छन्द प्रबन्ध ज्ञान शून्य मुझ अवोध से अपना आश्रित जानकर श्रीप्रिया प्रीतम जू ने परमैकान्तिक मधुराति मधुर लीला का लेखन कार्य प्रेरणा देकर करा लिया, यह युगल रस मूर्ति श्रीसीतारामजी की अहैतुकी कृपा है । लेखन व प्रकाश में बहुत सी त्रुटियाँ हैं, भाव ग्राही भावुक जनों से निवेदन है कि अपनी बस्तु को सुधार कर रसास्वादन करें ।

भावुक जनों का अनुचर,

सीताशरण

श्री तुलसी साहित्य प्रकाशन मण्डल
श्री रामकोट – श्री अवध धाम
उत्तर-प्रदेश (भारत)

❀ ॐ नमः श्रीसीतारामाभ्यां ❀

अनन्त श्री स्वामी रामहर्षण दासजी महाराज का

* शुभाशीर्वाद *

श्री युगल रहस्य माधुरी नामक ग्रन्थ को लिख कर परम श्रद्धेय श्री सीताशरण जी महाराज ने युगल रस के रसिक समाज के लिये अनुपम पेय का वितरण बड़ी भक्ति भावना के साथ किया है, इसके कारण वे बधाई के पात्र हैं, इस ग्रन्थ में ब्रह्म रामायणान्तर्गत कौशल खण्ड का अनुवाद ही भाषा छन्द के रूपमें प्रकट होकर हिन्दी भाषी सुजनों को रसासिक्त करने के लिये दृष्टिगोचर हो रहा है।

आशा करता हूँ कि रसिक जन इसे पढ़, सुन अथवा गाकर युगल रस के आस्वादन से वञ्चित न रहेंगे।

रामहर्षण दास

श्री सिद्धि सदन रामहर्षण कुन्ज

नयाघाट, श्रीअवध धाम।

* मंगल गान *

मंगल युगल किशोर मोर चितचोर रसिक वर ।
मंगल रति रस बोर रसिक शिरमौर सुछबि धर ॥ १ ॥
मंगल श्री मैथिली सुमंगल रास विहारी ।
मंगल सिय स्वामिनी सुमंगल पिय धनुधारी ॥ २ ॥
मंगल मिथिला धाम सुमंगल नित्य अवधपुर ।
मंगल कंचन बिपिन सुमंगल बन प्रमोद वर ॥ ३ ॥
मंगल कमला सरित सुमंगल श्री सरयू सरि ।
मंगल परिकर निकर मधुर मंगल उमंग भरि ॥ ४ ॥
मंगलमय पिय प्यारि सुमंगल सखी सहेली ।
मंगल मंजुल गीत गाय प्रमुदित अलबेली ॥ ५ ॥
मंगल मण्डप ब्याह सुमंगल कोहवर लीला ।
मंगल रास बिलास हास रस आनन्द मीला ॥ ६ ॥
मंगल सिद्धिकुमारि सुमंगल रँग रस होरी ।
मंगल प्रीतम प्रिया सुमंगल निधि प्रिय जोरी ॥ ७ ॥
मंगल युगल रसस्य माधुरी मंगल्त रूपा ।
मंगल "सीताशरण" सुमंगल मधुर अनूपा ॥ ८ ॥

दो०–मंगल मंजुल मोद निधि, सिय पिय युगल स्वरूप ।
मंगलमय लीला ललित, मंगल धाम अनूप ॥१॥
मंगल सीताराम यह, नाम सुमंगल मूल ।
मंगल 'सीताशरण जपि, मिटत त्रिविध भवशूल ॥२॥
मंगल श्री अंजनि सुवन, सद्गुरु मंगल रूप ।
मंगल 'सीताशरण' नित, ध्यावत युगल स्वरूप ॥३॥

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

* अनुक्रमणिका *

* श्री युगल रहस्य माधुरी विलास *

अनन्त श्रीमैथिली रमणो विजयतेतराम्

श्रीमति सर्वेश्वरि श्री चारुशीलायै नमः

श्रीमन्मारुत नन्दनाय नमः

श्रीमते भगवते जगतगुरु अनन्त श्रीरामानन्दाचार्याय नमः

श्री मते अग्रदेवाचार्याय नमः

श्री मते करुणा सिन्धवे नमः

श्री मत्यैरसिक अल्यै नमः

श्री मते मधुकर श्री सियाशरणाय नमः

अनन्त श्रीसद्गुरु चरण कमलेभ्यो नमः

दोहा—

जय जय जय करुणानिधे सद्गुरु देव उदार ।
करि सुकृपा मम हृदय में प्रगटाइय रसधार ॥ १ ॥
श्रीमद्व्यास रचित मधुर कौशल खण्ड अनूप ।
लिखौं छन्द अनुवाद अब, रखिहिय युगल स्वरूप ॥ २ ॥
सरल छन्द भाषा सरल, रसिकन प्राणाधार ।
सरल सुखद पावन परम, समन सकल भवभार ॥ ३ ॥
प्रेमिन प्राण समान प्रिय, युगल रहस रससार ।
सियपिय मधुर विहार वर, रसिकजनन हियहार ॥ ४ ॥
सुधासिन्धु सम सुखद प्रिय, कुरुचि विमर्दनहार ।
स्वच्छ सहज शुचि सरस तम, मधुर चरित रससार ॥ ५ ॥
सियसियपिय श्री पवनसुत, सद्गुरु देव उदार ।
सीताशरण नवल चरित, दर्शाइय सुखसार ॥ ६ ॥

शुद्ध सनेही रसिक जन, तिन पद रजदृग लाय।
सीताशरण युगल रहस, कहौं यथा मति गाय ॥७॥
काव्य कला कमनीयता, कौशल विविध प्रकार।
जानौं सीताशरण नहिं, केवल कृपा अधार ॥८॥
यद्यपि देवी देव बहु, हरि के बहु अवतार।
सेवा करने योग्य सब, करत स्वजन पर प्यार ॥९॥
तद्यपि युगल किशोर श्री, सीताराम उदार।
गुन अवगुन देखत नहीं, जन कर करत सँभार ॥१०॥
सकृत बार कर जोरि जो, कहै शरण हौं राम।
अपनावत जन जानि तेहि, देत परम अभिराम ॥११॥
अति उदार सिय को विरद, जीवहिं दुखी निहार।
विनय किये बिन दीन की, सब विधि करत सँभार ॥१२॥
सीताराम चरित्र बहु, सकल सुखद रस रूप।
तदपि रहस्य चरित्र अति, रसमय परम अनूप ॥१३॥
किन्तु तासु अनुभव नहीं, करि पावत सब लोग।
श्रीगुरु कृपा प्रसाद बिन, किये बिपुल जप जोग ॥१४॥
जीवहिं अति असमर्थ लखि, श्रीहरि धरि गुरुरूप।
रसमय चरित दिखाय हिय, दर्शावत स्वस्वरूप ॥१५॥
सियपिय केलि रहस्य मय, सब सुख रस को सार।
ध्यावत शिव शुकदेव मुनि, सीताशरण अधार ॥१६॥

卐
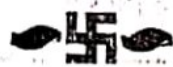
श्री युगल रहस्य माधुरी विलास

बृहत्कौशल खण्डे-प्रथमोऽध्यायः—

सखा रास प्रकरण

रोला छन्द—

जयति युगल चितचोर मोर रस रहस प्रकाशक।
श्री सद्गुरु सुखधाम स्वजन मन तिमिर विनाशक ॥ १ ॥
जयति मोह भ्रम हरन भरन हिय ज्ञान सरस तर।
ललित लाड़िली लाल केलि कौतुक सनेह घर ॥ २ ॥
जयति मैथिली रमन चरन पंकज रतिदाता।
सद्गुरु कृपा स्वरूप सतत प्रणतारति त्राता ॥ ३ ॥
वरणौं विमल विहार नाथ अस कृपा करीजै।
युगलकेलि कमनीय सरस मम हिय भरि दीजै ॥ ४ ॥
लखौं हृदय विच अमल चरित पावन मनहारी।
सीताशरण कृपालु यही वर विनय हमारी ॥ ५ ॥
जयति लाड़िली सीय सतत प्रीतम रस पागी।
निरखि मधुर मुखचन्द्र रहत निशिदिन हियलागी ॥ ६ ॥
रसिकन जीवन प्राण पियापद प्रीति प्रकाशी।
सरस सरल सुकुमारि सजन सँग रहस विलाशी ॥ ७ ॥
ममजीवन आधार कृपामयि राजकिशोरी।
रसिकन रस दातार पिया मुखचन्द्र चकोरी ॥ ८ ॥

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

लिखौं चरित अति अमल मधुर सुठि सरस सुहावन ।
कीजै कृपा कटाक्ष होय रसिकन मनभावन ॥ ६ ॥
निज शरणागत जानि कृपा करिये सुकुमारी ।
सीताशरण उदार विरद पर हौं वलिहारी ॥१०॥
जयति सरस सुकुमार श्याम सुन्दर सनेह घर ।
रघुनन्दन मन हरन समन भव रूप उजागर ॥११॥
जयति मैथिली रमन मंजु मन मोहन प्यारे ।
चपल चतुर चितचोर मधुर अतिसय सुकुमारे ॥१२॥
जयति प्रेम परतन्त्र परम पर तत्त्व परेशा ।
रसस्वादी रसरूप रमतरस माँहि रसेशा ॥१३॥
कीजै कृपा कृपालु कहौं कल कीरति पावन ।
सरस मधुर मन हरन होय रसिकन रसछावन ॥१४॥
प्रीतम प्राण अधार प्रीति वर्धक सुकुमारे ।
सीताशरण सनेह सहित हिय बसहु हमारे ॥१५॥
जयति युगल पद कंज मंजु मम प्राण अधारे ।
वन्दौं सुरज सनेह सहित मन मोद अपारे ॥१६॥
जयति युगल रसरीति प्रीति वर्धक रसदानी ।
सर्वेश्वरि श्री चारु शिला अनुपम गुण खानी ॥१७॥
जय मैथिली अभिन्न भाव बश किये रसिकवर ।
सब परिकर पूजिता परम प्रिय युगल नेह घर ॥१८॥
सकल सखिन सिरमौर चरन वन्दित त्रयदेवा ।
तव आयसु सिर धारि करैं सखि सिय पिय सेवा ॥१६॥

नित नव केलि कलोल कला कौशल प्रगटाई ।
परिकर युत पिय प्यारि लहत सुख स्वाद अघाई ॥२०॥
विन तव कृपा कटाक्ष करे कोइ कोटि उपाई ।
युगल रहस्य विलास कदाउर में न दिखाई ॥२१॥
वन्दौं चरण सरोज कृपा करिये सुकुमारी ।
सिय पिय केलि रसाल अमल मति लखै हमारी ॥२२॥
सुनि मम विनय विशेष विमलवर चरित अनूपम ।
गुनशीला हिय बीच लखाइय अति रसरूपम ॥२३॥
जयति मधुर रस रूप कृपामयि अति सुकुमारी ।
श्रीमति श्री सौन्दर्यशिला मम प्राण अधारी ॥२४॥
सियपिय प्रेमपियूष दानि मृदुचित नव नागरि ।
कीजै कृपा कटाक्ष चरण वन्दौ गुनआगरि ॥२५॥
युगल विहार रहस्य मधुर मम हिय उमगावै ।
लीला ललित विलोकि सुमन रस सिन्धु समावै ॥२६॥
अनुपम रास विहार लिखौं रसिकन सुखदाई ।
गुनशीला रावरी कृपा पर नित वलि जाई ॥२७॥
मम जीवन आधार परम प्रेमामृत दानी ।
सीताशरण रसाल रहस प्रगटहु रसखानी ॥२८॥
श्री सुभगा लक्ष्मणा पद्मगन्धा नव नागरि ।
हेमा क्षेमा बरारोहा अति रूप उजागरि ॥२९॥
श्री सुलोचना सखी प्रमुख ये अष्ट सहेली ।
चारुशिला रुख पाय रचत सिय पिय नव केली ॥३०॥

अपर लाड़िली लाल सकल परिकर पद ध्यावौं ।
जिनकी कृपा काटच्छ नवल लीला दर्शावौं ॥३१॥
सब मिलि कीजै कृपा युगल रस केलि सुहावन ।
प्रगटै मम हिय माहिं शम्भु शुक अजमन भावन ॥३२॥
श्री मिथिलापुर नित्य नवल कंचन बन पावन ।
कमला विमला दुग्धमती लच्मणा सुहावन ॥३३॥
अपर अमितसर सरित विपुल लीला थल जेते ।
मिथिला धाम मझार प्रेम युत वन्दौं तेते ॥३४॥
वन्दौं अवध अनूप अमल सरयू प्रमोदवन ।
जहँ विहरत रसिकेश युगल परिकर प्रसन्न मन ॥३५॥
द्वादश विपिन प्रधान अपर उपवन बहुतेरे ।
कोटिन कुंज निकुंज लखौं जहँ चरित घनेरे ॥३६॥
करौ सकल मिलिकृपा लखौं लीला सुखदाई ।
गुनशीला रसमयी होय रसिकन मन भाई ॥३७॥
श्रीयुत पवनकुमार रसिक जन जीवन दाता ।
वन्दौं चरण सरोज रहस रसिया रस ज्ञाता ॥३८॥
रसाचार्य रससिन्धु मगन रसनिधि अवगाहीं ।
युगल माधुरी छके रहत निशि दिन हिय माहीं ॥३९॥
जेहि दिशि हेरत सकृत सकल उत्पात नशाहीं ।
सियपिय केलि कलोल परम रसमय दर्शाहीं ॥४०॥
करै यत्न बहु भाँति योग जपतप समुदाई ।
पर तव कृपा कटाच्छ बिना रस परसि न जाई ॥४१॥

विरद उदार अपार सकल सुर नर मुनि जानै।
किये स्ववश सियराम सरस सेवा मनमानै ॥४२॥
जबलौं पवनकुमार कृपा करिके न निहारत।
तबलौं श्रीरसिकेश राम रघुवर न सम्हारत ॥४३॥
रावरि कृपा कटाच्छ विना कोउ सिय वर सेवा।
करहि कष्ट बहुभाँति लहैं नहिं नर मुनिदेवा ॥४४॥
याते कृपा अगार करौं शतकोटि प्रणामा।
कीजै ऐसी कृपा लखौं रसरहस ललामा ॥४५॥
युगल रहस्य अनूप अमलसम हिय दर्शावै।
लीला ललित रसाल निरखि मन अनत न जावै ॥४६॥
मृदुचित परम उदार कृपामय करुणाकन्दा।
सीताशरण अधार मिटावहु भव दुख द्वन्दा ॥४७॥
श्री अनन्त सम्पन्न जगतगुरु रामानन्दा।
वन्दौं चरण सरोज कृपा करिये सुख कन्दा ॥४८॥
श्रीमद्अग्राचार्य रसिक सम्राट महाना।
कृपानिवास रसज्ञ रास रस रसिक सुजाना ॥४९॥
रामप्रसादाचार्य रसिक जन ज्योति प्रकाशक।
करुणासिन्धु उदार रसिक हियकमल विकाशक ॥५०॥
(श्री) रसिकअली रस रूप भाव भीने निशिवासर।
ध्यावत युगल किशोर केलि कल मधुर सरसतर ॥५१॥
श्री मधुकर महाराज रसिक जन आनन्द दाता।
क्षमा दया के रूप रहस रसिया रस ज्ञाता ॥५२॥

रसाचार्य जे भये अहैं, जे होइहैं आगे ।
वन्दौं सबके चरण कमल अतिसय अनुरागे ॥५३॥
कीजिय कृपा कृपालु कहौं रस रहस सोहावन ।
सुधा सार सुख सदन सरस रसिकन मन भावन ॥५४॥
रसिक समाज रहस्य विज्ञ मिलि कृपा करीजै ।
युगल केलि कमनीय सरस मम हिय भरि दीजै ॥५५॥
सब मिलि कीजै कृपा ग्रन्थ होवै मन भावन ।
सीताशरण सुरसिक जनन हिय हार सुहावन ॥५६॥
यह श्री कौशल खण्ड सूत शौनक सम्बादा ।
श्रीमद्व्यास सुरचित सरस सब समन विषादा ॥५७॥
श्रवण सुखद मन मनन करत पावत विश्रामा ।
पूरन प्रेम पियूष परम प्रिय रहस ललामा ॥५८॥
निजमति गति अनुसार कहौं सद्गुरु पद ध्याई ।
श्री मत्अंजनि लाल चरण पंकज शिर नाई ॥५९॥
एक समय सुख सहित सूत शौनक मुनि राजे ।
प्रभु प्रेमामृत सिन्धु मगन शुभ सम्पति साजे ॥६०॥
परम विनीत स्वभाव प्रीति युत बचन अमोले ।
जोरि युगल कर वन्दि चरण शौनक मुनि बोले ॥६१॥
अहो मुनीश महान आप मति धीर सुजाना ।
सकल ऋषिन सन श्रवण किये श्रुति शास्त्र पुराना ॥६२॥
धारण कीने सकल परम उपदेश सोहावन ।
आप समर्थ उदार धन्य भक्तन मन भावन ॥६३॥

कहिये कृपा निधान सकल गुण धाम रसाला ।
मन रंजन सच्चिदानन्द रघुवीर कृपाला ॥६४॥
कोटि कामकमनीय सु छवि जाके प्रति अंगन ।
चितवत चितय चुराय लेत रँगि अपने रंगन ॥६५॥
सबको मन अभिराम रमत जोगी जन जामें ।
जो सब जगहिं रमाय रमत अपना हूँ तामें ॥६६॥
क्या कीन्हीं कल केलि कला कौतुक रघुनन्दन ।
मधुर रहस्य विहार अमित ललना गण संगन ॥६७॥
परम प्रेम रस सार रास लीला सुखदाई ।
बहु नवलन सँग रमण किये प्रमुदित रघुराई ॥६८॥
यदि बहु कियो विहार रास रस सखिन पियायो ।
रमि रमाय तिन संग अमल रस स्वाद चखायो ॥६९॥
तो कहिये वे सखी कहाँ की कैसे आईं ।
धर्म सेतु मर्याद वान रघुवर किमि पाईं ॥७०॥
जग शिक्षक रघुवीर धर्म मर्यादा पालक ।
शुभ गुण गण आगार नीति मय खल दल घालक ॥७१॥
इक पत्नी व्रत धर्म कहहु फिर किमि निरवाह्यो ।
कियो सरस रस रास अगर बहु तियन रमायो ॥७२॥
वह रहस्य कमनीय गोप्य भव रोग रसायन ।
हम सब चाहत सुनन यथा मति हृदय बसायन ॥७३॥
जौं अधिकारी होउँ कृपा करि केलि अनूपा ।
कहिये परम उदार दयानिधि अति रस रूपा ॥७४॥

जासु श्रवण करि हृदय मध्य सीता वल्लभ पद।
प्रगटत प्रेम प्रधान परम पीयूष सुखद सद ॥७५॥
अचल अमल अनुराग होत अविछिन्न अनूपा।
तैल धार वत सतत एकरस अति सुख रूपा ॥७६॥
याते मम मन श्रवण करन हित अति अकुलावे।
कृपा निधान सुजान आप विन कौन सुनावे ॥७७॥
यद्यपि मैंने सुनी सन्त कृत बहु रामायन।
तद्यपि नहिं सन्तोष कदा मेरे मन पायन ॥७८॥
वैष्णव ज्वर नहिं शान्त पिपासा अधिक अधिकनित।
रस मय चरित सुनाय मोद भरिये मेरे चित ॥७९॥
लिखे यदपि बहु चरित आदि कवि वालमीक मुनि।
चित्र विचित्र सुचरित स्वच्छ सुखहोत श्रवण सुनि ॥८०॥
बाल अवस्था माहिं जाय गुरु गृह रघुनन्दन।
विद्या को अभ्यास कियो श्रम सहि जगवन्दन ॥८१॥
पुनि माता अरु पिता केरि सेवा भल कीनी।
लहेउ अमित श्रम तदपि सीख सब जगको दीही ॥८२॥
यदपि जगहिं अह्लाद होत सुनि प्रभु सेवकाई।
तदपि खेद चित माहिं होत लखि अति मृदुताई ॥८३॥
बहुरि परस्पर भ्रातृ प्रेम पूरित रघुराई।
सहे अनेकन क्लेश स्वयं दी तिनहिं बड़ाई ॥८४॥
उनकी रुचि रखि सतत प्यार अपनो दिखलायो।
पावन प्रेम पियूष पान तिन को करवायो ॥८५॥

यदपि अवस्था परम मृदुल तन अति सुकुमारा।
तदपि अनुज सुख देन हेत श्रम सहयो अपारा ॥८६॥
युवा अवस्था पाय जाय दण्डक बन माहीं।
सहे अनेकन दुःख कहे मोसे नहिं जाहीं॥८७॥
पुनि प्रिय प्रजा सुपुत्र सरिस पाली रघुवीरा।
करि सुव्यवस्था सकल सही निज तन पर भीरा ॥८८॥
बहुरि किये बहु यज्ञ कीन्ह उद्योग सह्यो श्रम।
किये कठिन कर्त्तव्य सुनत मनमाहिं होत भ्रम ॥८९॥
यदपि सकल व्रत कर्म धर्म हम जानत नीके।
तदपि सुनहु हे नाथ होत सन्तोष न जीके ॥९०॥
क्योंकि धर्म अरु कर्म सुव्रत सुख तुरत न देवत।
बीतै जब प्रारब्ध देह प्राणी तब लेवत ॥९१॥
धन उपार्जन आदि अर्थ अभिमान बढ़ाई।
प्रबल जाल में बाँधि नाश की राह दिखाई ॥९२॥
याग रूप शुभ धर्म यदपि जग में जस दाता।
नाशवान पुनि अहै कहत श्रुति शास्त्र सुज्ञाता ॥९३॥
अतः परम सुकुमार कोटि कन्दर्प दर्प हर।
नृप सुत श्री रघुराज रसिक शिरताज सुछविधर ॥९४॥
प्राणहुँ ते प्रिय परम जीव के जीवन दाता।
रस सागर रघुवीर सकल रस रहस सु ज्ञाता ॥९५॥
उनके योग्य विहार एकान्तिक रास विलासा।
कहिये कृपा अगार यही हमरी अभिलाषा ॥९६॥

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

रसमय रास विहार यही पुरुषार्थ महाना ।
हम सब जानत भलीभाँति रस शास्त्र बखाना ॥९७॥
कहौं काह समुझाय आप सब शास्त्र सुज्ञाता ।
रहस विलास सुनाय होइये आनँद दाता ॥९८॥
मधुर रास रस रमण परम पीयूष सरस तर ।
श्रवण सुखद अभिराम लाड़िली लाल नेह घर ॥९९॥
रसिक रहस्य रसज्ञ रसिक सम्मत निजवानी ।
हम सब की अभिलाष करिय पूरन सुखदानी ॥१००॥

दो०—हृदय माहिं अति सुख भयो, जान निजहिं प्रभुदास ।
अपने पर सन्तन कृपा, समुझत बढ़ेउ हुलास ॥१॥

सुनत ऋषिन की गिरा सरस अति मधुर विनययुत ।
गूढ़ सुखद प्रिय परम सार गर्भित अति अद्भुत ॥ १ ॥
परम रसज्ञ उदार सूक्ष्म अति बुद्धि प्रवर तर ।
बोले सुमधुर बचन सने सुचि सुधा सारवर ॥ २ ॥
अहो ! आज मैं धन्य आप सब सन्त सुजाना ।
मोपर करि अति कृपा मोहिं प्रभु को जन जाना ॥ ३ ॥
प्रभु निज जनके बचन सत्य करि देत दिखाई ।
तौ मोपर अब अवसि कृपा करिहैं रघुराई ॥ ४ ॥
परम भागवत अहैं आप सब प्रभु पद सेवत ।
सन्तन केर स्वभाव बड़ाई सबको देवत ॥ ५ ॥
आप सबन के बचन करैं पूरन रघुनन्दन ।
तौ मैं होउँ निहाल द्रवैं सियवर जग वन्दन ॥ ६ ॥

कीन प्रश्न सुख सदन मनोहर परम उदारा।
नवेंश्वर रसिकेश राम रघुवंश कुमारा ॥७॥
परम तत्त्व परमीश परमगति जगत अधारा।
व्यापक व्याप्य अनन्त अमल अनवद्य अपारा ॥ ८ ॥
निराकार निर्लेप अगुन गुन सागर नागर।
ब्रह्म सच्चिदानन्द कन्द रसनिधि सुख सागार ॥ ९ ॥
परतम परम परत्त्व प्रभा पूरित जग जाकी।
कीरति अमल अदाग परम कमनीय सुधाकी ॥१०॥
ताके गुण गण श्रवण करन चाहत मुनि वृन्दा।
निज मति गति अनुसार कछुक कहिहौं सुख कन्दा ॥११॥
असकहि कछु प्रतिकस्थ भये पुनि ध्यान मगनमन।
करत मङ्गलाचरण पगे अति सय सनेह धन ॥१२॥
कोटि काम कमनीय श्याम सुन्दर मन मोहन।
पीत बसन सुचि कमल नयन सुषमा निधि जोहन ॥१३॥
प्राणहुँ ते प्रिय प्राण प्राण के आनँद दाता।
मन्द मधुर मुस्कान मंजु रस मय मृदुगाता ॥१४॥
कोटिन चन्द्र लजात बदन सुख सदन सोहावन।
मणि मण्डित आभरण अमल भूषित छवि छावन ॥१५॥
अंग अंग रस सिन्धु सुघर प्रिय मधुर मनोहर।
वन्दौं मन क्रम बचन हृदय से परम रसिक वर ॥१६॥
श्यामा तन दुति हेम प्रभासम बदन सोहवन।
अमल कमल अनुहार परम सुषमा सरसावन ॥१७॥

मृग शावक ज्यों सरस नयन मंजुल अति पावन ।
चितवनि सौम्य रसाल रसिक पिय मन ललचावन ॥१८॥
मंजु मधुर मृदु हँसन लसन प्रीतम वश करनी ।
निज इच्छा अनुसार सदा लीला तन धरनी ॥१९॥
मंजुल मंजु सुकेश सरस मन हरन सुधारे ।
सुचि सुन्दर सुठि सुमन केर मालादि सम्हारे ॥२०॥
दिव्य भव्य आभरण अंग भूषित छबि खानी ।
शोभित सुषमा सदन रसिक रघुवर पटरानी ॥२१॥
कर पंकज प्रिय अरुण सरस तर कमल धरेकर ।
राजहिं श्री मैथिली रसिक पिय प्रेम सुधाधर ॥२२॥
नृपकिशोर चितचोर चतुर चूड़ा मणि मनहर ।
प्राण सजीवनि सरिस सदा मानत रसिकेश्वर ॥२३॥
श्री विदेहनन्दिनी चरण शरणागत जानी ।
दीजै प्रेम प्रवाह हृदय भरि रति रस खानी ॥२४॥
हौं सबही गुन हीन दीन तव शरण मझारी ।
आयो कृपा स्वरुप कृपा करिये सुकुमारी ॥२५॥
सकल जगत प्रिय प्राण वायु उनको सुख दाता ।
श्री अंजनी सु अंक मोद वर्धन श्रुति ज्ञाता ॥२६॥
सियवर भक्त प्रधान साधकन सिधि फल दायक ।
सब बाधा करि दूरि मारि खल दलन सहायक ॥२७॥
सिय रघुवर प्रिय प्रेम परम पावन संचारक ।
नाम रूप लीलादि रसिक रस राज प्रचारक ॥२८॥

Scanned by CamScanner

उन श्री पवनकुमार मातु अंजनी दुलारे।
वन्दौं चरण सरोज परम सुषमा आगारे ॥२९॥
कीजै कृपा निधान कृपा अति अमल उदारा।
कहौं सरस रस रास हृदय भरिये उद्गारा ॥३०॥
पुनि श्री सूत सुजान रसिक रघुवरपद वन्दे।
बार बार सिर नाय हृदय में अति आनन्दे ॥३१॥
बोले वचन सनेह सने प्रिय मधुर सरस तर।
हे रसिकेश उदार रास रस रमण सुघरवर ॥३२॥
बानी विमल विशेष बसत जिनके मुख माहीं।
क्षमा दया आगार भाव सुचि रहत सदाहीं ॥३३॥
मृदुचित सरस स्वभाव शील सौहार्द अपारा।
रस सागर रस रहस रंग रंजित सुकुमारा ॥३४॥
श्री रसराज शृंगार सार ताको प्रिय पावन।
परम गोप्य मन हरन रास रस अतिहिं सोहावन ॥३५॥
जो सब भाँति अवर्णनीय सोइ गाय सुनावौं।
अमित अनन्त अपार चरित में थाह न पावौं ॥३६॥
दीनो सुमति प्रकाश मोहिं जो कृपा निधाना।
सोइ कीजै स्वीकार अहो रसिकेश सुजाना ॥३७॥
छन्द प्रबन्धन माहिं होहिं त्रुटि विविध प्रकारा।
यदि अनुचित हो जाय छमिय अपराध अपारा ॥३८॥
हम सब भाँति अयान फसे नित माया माहीं।
सनी अविद्या माहिं बुद्धि साधन कछु नाहीं ॥३९॥

पर प्रभु कृपा अगार क्षमा सागर सुखधामा।
छमिये जो त्रुटि होइ रसिक मन हरन ललामा ॥४०॥
मंजुल लता सु कुंज मध्य विहरत जो वामा।
रमणीया सब भाँति सरस सर्वथा अकामा ॥४१॥
लौकिक विषय बिकार गन्ध सपनेहुँ हियनाहीं।
तव सुख तत्पर रहत सतत रुचि तव पदमाहीं ॥४२॥
ऐसी नव नायिका भाव दीजै रघुनन्दन।
हे उदार रसिकेश रास रसिया रस रन्जन ॥४३॥
यहि बिधि प्रभु से छमा मागि श्री सूत सुजाना।
लगे कहन रस पगे राजनन्दन गुण गाना ॥४४॥
सुचि सुशील गुण सिन्धु सरल मृदुचित सुकुमारे।
चक्रवर्ति महाराज निरखि मन मोद अपारे ॥४५॥
श्री गुरु वरहिं बुलाय यज्ञ उपवीत करायो।
गज मणि धेनु अनेक दान विप्रन ने पायो ॥४६॥
अमित रत्न मणि असन बसन गज धेनु सुहाई।
गुरु दक्षिणा सु पाय मुनी बशिष्ठ हर्षाई ॥४७॥
बहु विधि आशिर्वाद दियो सब राज कुमारन।
चिर जीवो सब कुँवर होहु भू के भय हारन ॥४८॥
अस कहि गै निज भवन प्रेम रस पगे मुनीश्वर।
पितु आयसु शिर धारि गये गुरु गृह रसिकेश्वर ॥४९॥
श्री बशिष्ठ मुनिराज बिमल पर्वत सम अहही।
विद्या रूपी नदी सकल मुख से नित बहहीं ॥५०॥

जिमि पर्वत से निकरि सकल सरिता समुदाई।
अमित अगाध अपार सिन्धु में जात समाई ॥५१॥
तिमि सब विद्या नदी सरिस गुरु मुख से निकसीं।
रघुनन्दन गम्भीर सिन्धु में जाय सु निबसीं ॥५२॥
सागर सम रस सदन राम रघुवंश कुमारा।
अति अगाध गम्भीर गुणाकर अमित अपारा ॥५३॥
पर रघुवीर विशेष सकल उपमा न समाना।
खारो अहै समुद्र मधुर तम राम सुजाना ॥५४॥
सिन्धु माहि बहु दुष्ट छिपत प्रभु दुष्ट सँहारी।
जलधि रत्न जड़ होत यदपि महिमा जग भारी ॥५५॥
रघुवर सिन्धु अपार माहिं गुण रत्न अपारा।
त्तमा दया सौहार्द सरल मृदुचित सुख सारा ॥५६॥
वात्सल्य रस खानि कृपा करुणा सम दरसी।
भव सागर से पार होत पाँवर पद परसी ॥५७॥
सियवर गुण चैतन्य सकल भक्तन सुखदाई।
प्रेमिन प्राण अधार महाँ महिमा जग छाई ॥५८॥
है मर्यादा वान जलधि पर दोष अपारा।
अटल अमल मर्याद वान रसिकेश उदारा ॥५९॥
निर्हेतुकी कृपालु प्रणत जन पालन हारो।
भक्त सुखद जग विदित विरद श्रुति शास्त्र पुकारो ॥६०॥
अन्तर एतो अछत सदा सागर रघुवर में।
यद्यपि समता देत प्रबुध जलनिधि छबि घर में ॥६१॥

दूषण रहित रसेश माहिं देशान्तर भासा।
सब देशन की भिन्न भिन्न तिन कियो निवासा ॥६२॥
सकल सुविद्या अमित कला रघुवरहिं सिहाई।
कीनो आकर स्वयं वरण अतिसय सुख पाई ॥६३॥
सुठि कुलगना वाल यथा सुचि पुरुषहिं पाई।
आदर युत करि वरण मोद मन लहत अघाई ॥६४॥
तिमि रघुवर को पाय सकल विद्या हर्षाई।
निजहिं कृतारथ मानि सुखी होवत अधिकाई ॥६५॥
पशु पच्ची कृमि त्रियग योनि भाषा समुदाई।
जग में जे शुभ कला बसीं रघुवर तन आई ॥६६॥
अति रमणीय रसेश राजनन्दन शुभ अंगा।
नवला ज्यों आपही आय सब कला अभंगा ॥६७॥
तरुणी जिमि आसक्त होइ पुरुषहिं अपनावै।
अपने ही सुख लागि विविध विधि ताहि रिझावै ॥६८॥
जिमि बसन्त ऋतु माहिं मधुप पुष्पन पर आवत।
स्वयं आय रस पान करत नहिं पुष्प बुलावत ॥६९॥
तैसे ही गुण रासि सकल रघुवर को पाई।
नवल अवस्था युक्त राज नन्दन ढ़िग आई ॥७०॥
जाके पावन चरित केर सौरभ जग व्यापी।
कीरति अमल अदाग गाय उतरत भव पापी ॥७१॥
जे गुण दुर्लभ होत जगत में पुरुषन काहीं।
सो समूह आ बसत स्वयं रघुवर तन माहीं ॥७२॥

माता पिता सखादि अनुज परिजन पुरबासी ।
सब को पावन प्रेम प्रबल पावत सुखरासी ॥७३॥
निज प्राणन ते अधिक प्रेम सब को रघुवर पर ।
तैसे ही सनमान करत सब ही को छवि धर ॥७४॥
अमित कोटि कन्दर्प दर्पहर सु छवि निहारी ।
चाहत निज पति वरण करन युवती सुकुमारी ॥७५॥
अविवाहिता सुबाल मनोरथ मन में करहीं ।
हे विधि कौने भाँति मोहिं रघुनन्दन बरहीं ॥७६॥
यद्यपि अस नहिं उचित ग्राम बाला भगिनी सम ।
अनुपम रूप निहार अगर चाहें सँग में रम ॥७७॥
तदपि बात एक सुनहु सकल सज्जन मन लाई ।
हैं अनादि अनवद्य पुरुष सियवर रघुराई ॥७८॥
पर तर परम परेश ब्रह्म व्यापक रघुनन्दन ।
एक अनप अनन्त अमल निज जन मन रंजन ॥७९॥
जैसें श्रुति प्रति पाद्य ब्रह्म में वेदान्ती जन ।
ब्रह्म रसा अनुभूति करत भले सुधि तन मन ॥८०॥
आगम निगम पुराण स्मृति प्रतिपाद्य एक रस ।
राम सच्चिदानन्द कन्द चर अचर माहिं बस ॥८१॥
अखिल योषिता एक पुरुष केवल रघुनन्दन ।
रस क्रीड़ा रमणीय सकल रमणी मन रंजन ॥८२॥
नख सिख रूप उदार सुभग गुण रूप मनोहर ।
राजत सुषमा सदन मदन मद हर श्री रघुवर ॥८३॥

राम स्वभाव सनेह मिलनि बोलनि गुण करनी ।
सब कोउ करत बखान सकल हिय में सुख भरनी ॥८४॥
लोकोत्तर गुण वान पिता श्री चक्रवर्ति वर ।
परम प्रवीन सुजान लखे तिन राम प्रेम घर ॥८५॥
जेते शुभ गुण उचित लखे रघुवर तन माहीं ।
किंचित नाहिन कमी सकल पूरन दर्शाहीं ॥८६॥
कदा न आज्ञा दीन वत्स सीखहु यह बाता ।
सकल कला गुण सिन्धु शील सुचि सुभग सुगाता ॥८७॥
मृदु स्वभाव सुख खानि सरस मन हर रघुराई ।
निरखि पिता मन मुदित दीन आयसु हर्षाई ॥८८॥
अहो वत्स अब आप करहु स्वच्छन्द विहारा ।
पितु आयसु शिर धारि मुदित रघुवंश कुमारा ॥८९॥
करि सरयू स्नान बसन भपन तन धारे ।
मणि मुक्तन बहु रत्न जड़ित श्रृंगार सँवारे ॥९०॥
अँग अँग ललित श्रृँगार साजि आये जहँ माता ।
निरखि मातु मन मोद भरीं पुलके सब गाता ॥९१॥
रघुनन्दन अनुराग सहित चरणन शिर नाई ।
निज कर मातु उठाय लाय हिय अति सुख पाई ॥९२॥
चूमि सरस मुख कंज सूँघि शिर अति हर्षाई ।
दधि ओदन अति प्यार सहित निज करन पवाई ॥९३॥
बहुरि अंक बैठारि प्यार करि लेत बलैइया ।
चिरंजीव हो ललन सखन युत तुम सब भैइया ।९४॥

पग वन्दन करि चले मातु मन मोद बढ़ाई ।
यन्त्र मन्त्र से करी मातु रक्षा हर्षाई ॥९५॥
यहि विधि करि बहु प्यार सुतहिं माता सुखपायो ।
"सीताशरण" सनेह सहित बहु विधि दुलरायो ॥९६॥
यहि विधि सुन्दर श्याम राम पूरन गुन सागर ।
पालत प्रजा प्रमोद भरे सुख निधि नव नागर ॥९७॥
इमि रघुराज किशोर रसिक चूड़ामणि मन हर ।
मणि मुक्तन युत पाग बसन भूषन अँग अँग धर ॥९८॥
मनहुँ समूह कपूर पूर्ण सिन्दूर सुक्ति ज्यों ।
मन्मथ प्रिया सोहाग भाग पूरक सूचित त्यों ॥९९॥
दन्त पंक्ति अति शुभ्र प्रभा दामिनि ज्यों दमकति ।
हँसनि समय कमनीय माधुरी चहुँ दिशि चमकति ॥१००॥

दो०—नख सिख अनुपम माधुरी, चित चोरत वरजोर ।
हँसि हेरनि अति वश करनि, करति सबहिं रसबोर ॥२॥

नख सिख रूप अनूप सरस कुंचित कच सोहत ।
भव्य भौंह लखि कोटि कोटि मन मथ मन मोहत ॥ १ ॥
चपल चतुर चित चोर मधुर चितवनि अनियारी ।
पावन पूरित प्रेम सरस अद्भुत सुखकारी ॥ २ ॥
चलनि मत्त गज सरिस सुभग झूमत रस माते ।
रूप उदार अपार अकथ लखि सकल सिहाते ॥ ३ ॥
पलक पंक्ति लावन्य मनहुँ मनसिज धनु राजत ।
जीतन हित त्रैलोक मनहुँ असमसर सु साजत ॥ ४ ॥

यहि विधि भृकुटी कुटिल पगी रस दृष्टि सुहावन ।
स्ववस किये चर अचर प्रेम लम्पट मनभावन ॥ ५ ॥
प्रातः शुक्र समान ललित नाशामणि छवि धर ।
अधरन पर लहरात परम पावन प्रकाश कर ॥ ६ ॥
अरुण अधार रस सदन मदन मन मोहन हारे ।
लखि बिम्बा फल सकुचि जात समता न निहारे ॥ ७ ॥
दमकत छटा अपार ललित दाड़िम सकुचावन ।
उज्वल अमल अनप कान्ति कमनीय सुहावन ॥ ८ ॥
पुनि नायक मणि मुकुट श्याम सुन्दर किशोर वय ।
श्री प्रसाद ऐश्वर्य कृपा कमला प्रसाद जय ॥ ९ ॥
सचराचर मन वशीकरन गुण सब विधि धारे ।
लखि दृग ललित रसाल कहत अस देखन हारे ॥१०॥
जेहि पर कृपा कटाक्ष परै सो जन बड़भागी ।
अनायास गुण सिन्धु होइ प्रभु पद अनुरागी ॥११॥
कंबु कंठ कमनीय करति घोषित यह वानी ।
कलित कामिनी काम केलि कौतुक सुख खानी ॥१२॥
रंजित रस शृंगार ताल स्वर लय पिक बैनी ।
तिन को स्ववस बनाय सुखी करि सब मृग नैनी ॥१३॥
निज मन इन्द्रिय दमन कीन जग जीति सुखारी ।
सोभित सुषमा सदन रसिक मणि श्री धनुधारी ॥१४॥
उर श्री वत्स सुचिह्न बात अस देत जनाई ।
बसीं मनहुँ उर बीच आय श्री अति सुखपाई ॥१५॥

विपुल नायिका वृन्द निरखि रघुवीर निकाई ।
चाहेंगी उर लगन प्रवल अभिलाप बढ़ाई ॥१६॥
रघुवर कृपानिकेत दूरि करि बाधा सवरी ।
लैइहैं हृदय लगाय विपुल प्रमदा गुण अगरी ॥१७॥
जौं मैं करौं निवास न ढिग अइहैं कोइ वामा ।
अस निज मन गुन राम हृदय बिच कियश्री धामा ॥१८॥
रघुनन्दन द्वौ भुजा मनहुँ मन्मथ कर मुदगर ।
दूषण रहित रसाल ललित भूषण युत छवि घर ॥१९॥
कटि अति सूक्ष्म रसाल अपर स्थूल सकल अँग ।
आदि अंत अति अमित अकथ दरसत विचित्र ढँग ॥२०॥
अनन्त आदि सु अन्त माहिं बिच माहिं मनुज इव ।
करि लीला कमनीय करत सुख रूप जगत सब ॥२१॥
बड़ भागी ते पुरुष प्रेम पूरति रघुवर पद ।
जिन निरखे निज नैन बदत वर विबुध वेद विद ॥२२॥
रघुनन्दन पद प्रेम मोक्ष वैकुण्ठ न चाहत ।
करत विमल गुण गान हृदय रस निधि उमगावत ॥२३॥
प्रभु पद पंकज प्रीतिरीति जिनके मन माहीं ।
ते जन सीताशरण मुक्तिको चाहत नाहीं ॥२४॥
श्याम वरण मन हरण नील मणि मेघ कमल सम ।
विबुध वधुन के केश सरस श्रृंगार करत कम ॥२५॥
रमणीकता सुपुंज दिव्य दुर्वा दल दुति ज्यों ।
ललित लोनाई लहर लसत लोभित लखि मन त्यों ॥२६॥

खींचि सबनि की सार श्यामता स्वतन बसाई ।
निजतन की सुचि श्याम छटा सबमें छिटकाई ।।२७।।
रघुवर की श्यामता सकल सचराचर व्यापी ।
सुकुमारता सु अंग सुभगता से जग नापी ।।२८।।
सखन संग मुसुकात मधुर बोलत मृदुबानी ।
विहरत बीथिन करत केलि कन्दुक सुखदानी ।।२९।।
अवध निबासी नारि पुरुष शिशु युवा सयाने ।
रघुवीरहिं सब लोग प्राण हू ते प्रिय माने ।।३०।।
मृदु हँसि तिरछी तकनि जासु ऊपर परि जावे ।
वाको मन सर्वथा खैंचि तेहि स्वबस बनावे ।।३१।।
नव खन्डन में लसहिं ललित तरुणी समुदाई ।
निरखि माधुरी मगन दशा सात्विक तन छाई ।३२।।
हास रूप असि छेदि हृदय दृग ओट भये जब ।
प्राण अंत सम सबहिं परम दुख दाह दहे तब ।।३३।।
मृग लोचनि पिक वैनि स्वरहिं सकुचावन हारे ।
पुरुष श्रेष्ठ नृप मुकुट मौलि मणि राजदुलारे ।।३४।।
सँग शोभित सुकुमार सुभग शिशु दल सुखदाई ।
वदत विमल वर वैन परस्पर प्रीति बढ़ाई ।।३५।।
सुनत सरस प्रिय प्रीति पगे मृदु मधुर बचन वर ।
नव नायिका नवीन नेह हिय वर्धक छवि धर ।।३६।।
निज छवि जाल बिछाय सरस प्रिय नवल शिकारी ।
नवल नायिका वृन्द हृदय बेधेउ धनुधारी ।।३७।।

युवती गण मन मोहि जोहि हँसि श्री रघुनन्दन ।
दियो अमित सुख स्वाद भक्त रंजन जग वन्दन ॥३८॥
कबहुँ अश्व गज आदि सुरथ पर साजि समाजा ।
खेलन जात शिकार सखन युत श्री रघुराजा ॥३९॥
सरयू सरित सुकुंज निकुंजन माहिं सखन सँग ।
करत केलि कमनीय कला कौतुक विचित्र रँग ॥४०॥
ते बड़भागी सुजन सतत दर्शन जे पावत ।
उनको पावन प्रेम सकल सुर साधु सराहत ॥४१॥
रासस्थल में जात लखहिं मृग लोचनि बामा ।
करि कटाक्ष दर्शाय मनोरथ मन अभिरामा ॥४२॥
तजि गुरु जन संकोच लखहिं सुषमा रस पागीं ।
रघुनन्दन रँग रँगी सकल अतिसय अनुरागीं ॥४३॥
जहँ जहँ जात रसेश प्राण सब संग पठावैं ।
कहुँ मुग्धागण कलित राग रघुवर गुन गावैं ॥४४॥
ललित माधुरी भरी रागिनी स्वर सुमनोहर ।
सुनत रसिक शिर मौर करत क्रीड़ा सनेह घर ॥४५॥
श्री सरयू जल माहिं करत क्रीड़ा बहु बाला ।
करहिं चेष्टा बिविध भाव भावित छबि जाला ॥४६॥
जीतन हित रघुराज कुँवर को करहिं उपाई ।
पर चितचोर किशोर चतुर चंचल रघुराई ॥४७॥
निज चपलता दिखाय जीति मृदु हँसत रसिकवर ।
आत्म नाथ मम लखहिं सकल नवला प्रमोद भर ॥४८॥

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

मुख मयंक माधुरी मगन सब सखा समाजा।
यहि बिधि सुख रस प्रेम पगे रसिकन शिरताजा ॥४६॥
मन में करैं बिचार मुदित प्रमदा गण सारी।
अहो अहैं अति चतुर रसिकवर श्री धनुधारी ॥५०॥
जल क्रीड़ा तजि अनत जान नहिं चहैं नवेली।
रघुनन्दन रस रूप पगीं सिगरी अलबेली ॥५१॥
और कहाँ तक कहैं निरखि रघुराज कुँवर को।
मोहित लता सनेह बिबस लपटत रघुवर को ॥५२॥
बन देवी अरु देव मगन रसिकेश सुछवि पर।
चाहत अंग सुसंग रमण रति भाव हृदय भर ॥५३॥
जब मृगया हित जात राजनन्दन छबि सागर।
एक टक निरखत मृगी सरस रस रूप उजागर ॥५४॥
कर में लखि धनु वाण मगन तन मन सुधि नाहीं।
साक्षात गुनि कामदेव प्रमुदित मन माहीं ॥५५॥
विकसित करि निज नैन खड़ी छवि लखि सुख पावत।
भागत नहीं सनेह बिबस नहिं पलक गिरावत ॥५६॥
परिजन पुरजन माहिं जुरत जब सकल समाजा।
ब्याह यज्ञ सत्संग तहाँ आवत रघुराजा ॥५७॥
तब लखि रूप अनूप कोटि कन्दर्प दर्प हर।
नवल नायिका नेह पगैं लागैं समाधि वर ॥५८॥
यही भाँति प्रिय प्रजा प्रेम पूरित प्रसन्न मन।
लखि रघुराज किशोर सकल वारत तन मन धन ॥५९॥

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

सबही सदा अकाम काम दायक रघुवर को।
निरखि निरखि सुख सिन्धु मगन रसनिधि छविधर को ॥६०॥
ऐसो कौन समर्थ लेइ निज मन लौटाई।
जो डूबे छबि सिन्धु बात को कहै बनाई ॥६१॥
जेहि ने दृग भरि लखी रूप माधुरी अपारा।
वाने सीताशरण आपनो सर्वस वारा ॥६२॥
प्रेम सहित पितु मातु वन्दि पद श्री रघुराई।
गये परम एकान्त माहिं सेवक समुदाई ॥६३॥
अनुज सखन के संग कीन जो अति प्रिय लीला।
परम प्रेम रस सार परम पावन सुख शीला ॥६४॥
सोइ कहिहौं कलकेलि परम पावन अति प्रियकर।
जाहि ध्याय सुनि गाय लहिअ अतिसय प्रमोद उर ॥६५॥
एक दिवस रघुनन्द कन्द आनन्द द्वन्द हर।
गवने सरयू सुतट निकट हिय में उमङ्ग भर ॥६६॥
प्रीतिपात्र सँग अनुज सखा सेवक समुदाई।
विहरत विविधि प्रकार राजनन्दन सुख पाई ॥६७॥
करि बहु केलि कलोल क्रिया कौतुक कमनीया।
बोले बचन बिनोद ललित रघुवर रमनीया ॥६८॥
मम प्रिय सेवक सखा अनुज सुनिये मन लाई।
राजकुमारन माहिं कला चौंसठ बुध गाई ॥६९॥
सो तुम सबने भलीभाँति सीखी या नाहीं।
तेहि को काह प्रमाण सत्य कहिये मोहिं पाहीं ॥७०॥

ते सब बोले बचन आप जस चहैं प्रमाना।
करिय परीक्षा प्रबल हमनि की कृपा निधाना ॥७१॥
तब बोले रसिकेश कदा अवसर परिजाई।
तो क्या तुम नायिका रूप निज सकत बनाई ॥७२॥
सब बोले हाँ नाथ सुभग वनिता तन धारी।
करि लइहौं निज कार्य न कोइ करि सकत चिन्हारी ॥७३॥
सुनि हँसि बोले लाल कला निज निज दिखलाई।
बनिये नव नायिका तुरत सब बने सिंहाई ॥७४॥
सखन विरचि नायिका नवल करि ललित रासरस।
पायो परमानन्द प्रेम पगि गये भये बस ॥७५॥
सो सुख स्वाद समाज निरखि सुर नारिं मुदित मन।
निज विमान तजि गईं जहाँ रस सिन्धु श्याम घन ॥७६॥
कामिनि काम कलाप कीन कल केलि अनूपम्।
पायो परम प्रमोद भईं सब रसस्वरूपम् ॥७७॥
कोउ जनि शंका करै देइ वर दोष ललन को।
पुरुष वाम बनि दीन स्वकर क्यों राजसुवन को ॥७८॥
यह सब राम स्वरूप प्रेम रस की अधिकाई।
सुर नर मुनि बहु ज्ञानवान अभिमान बढ़ाई ॥७९॥
जो निरखै रस रास अवसि सो पगे प्रेम रस।
पुरुषापन नहिं रहै परसि रसिकेश होइ बस ॥८०॥
बनै नवेली वाम रूप तबहीं रस चाखे।
न तरु परसि नहिं जाय रास रस व्यर्थहिं भाषे ॥८१॥

करै कोटि किन यत्न विना बामा बपु कीने।
लहे ललित रसरास कदा नहिं हम भल चीने। ८२॥
काम मोह बस यदपि कोई अनुभवे रास रस।
अवसि पगे सुख सिन्धु हृदय निबसे उज्वल जस ॥८३॥
पाणि ग्रहण की प्रवल प्रतिज्ञा प्रभु सो करई।
यदपि काम आसक्त तदपि भव सागर तरई ॥८४॥
लहै अमृत रस रास अमल अनुपम सुख सागर।
पूरन परमानन्द प्रेम प्रतिभा नव नागर ॥८५॥
कारण यही बिशेष रुद्र रमणी तन धारी।
नृप किशोर चित चोर रास मण्डल सुखकारी ॥८६॥
आये स्वयं सप्रेम परम आदर प्रभु कीनो।
रमि रमाय हर्षाय रास रस करि सुख दीनो ॥८७॥
लखेउ न काहू मर्म सकल सुन्दरी चकित चित।
कहहिं अहो यह बाम कहाँ ते आई अद्भुत ॥८८॥
सरद रसिक राकेश सरिस मुख अति मृदु बैनी।
कोक कलाकल कुशल शूत्त्म कटि अरु मृग नैनी ॥८९॥
पुनि रसिकेश उदार रमण रस रंजित रघुवर।
करत सरस रस रास पगे नव नेह सुधासर। ९०॥
रास रमित तन स्वेद निरखि श्री पवन देव पुनि।
आये परम सुगन्ध चन्द्र पिक संग लिये गुनि ॥९१॥
कदली ललित रसाल रासमण्डल ढिग सारे।
तिनको मन्द हिलाय स्वयं श्री वायु पधारे ॥९२॥

कोइ मृदंग कोइ पणव अपर करताल बजावें।
कोइ समूह कपूर सुमन माला बर्षावें ।।९३।।
कोइ रस भाव निमग्न लिये कर सुठि मसालवर।
नृत्यत भाव विभोर नवेली पगीं नेह सर ।।९४।।
सीतल सुभग प्रकाश लसत विधु बदन मनोहर।
नृप कुमार सुकुमार भये प्रमुदित मन सोहर ।।९५।।
अद्भुत अमल रसाल रास मण्डल रस वर्षत।
नृत्यत परिकर निकर प्रेम पूरित हिय हर्षत ।।९६।।
लवंग सुपारी आदि अतर युत सुचि सुगन्ध वर।
वीरी विमल बनाय देत मुख कमल परस्पर ।।९७।।
मन्द मधुर मुस्कान सहित नव नेह नयन भर।
अति आदर युत वदत विमल वर बैन सरसतर ।।९८।।
कस्तूरी खस सहित मलय केशर सुठि मिश्रित।
स्वेद सहित शुभ अंग माहिं बहु बिधि करि चर्चित ।।९९।।
वय समान सब सखा परस्पर परम प्रवीने।
करत केलि कमनीय पगे प्रिय प्रीति नवीने ।।१००।।

दो०–मन मोहन मन मथ मथन, नख सिख सुभग स्वरूप।
नटवर राज किशोर पिय, सुषमा सदन अनूप ।।१।।

प्रेम पात्र प्रिय रत्न दण्ड कर कंजन लीने।
लगे व्यजन वर विमल डोलावत श्रम कम कीने ।। १ ।।
अमल अखण्ड अनूप रास मण्डल उत्सव वर।
नृत्यत प्रेमावेश निकर परिकर मन मुद भर ।। २ ।।

तन मन सुरति भुलान बसन भूपन अँग धारे ।
खसत भूमि पर गिरत अपर परिकरन सुधारे ॥ ३ ॥
जे सुर धरि तिय देह रास मण्डल प्रवेश करि ।
लहेउ सरस रसरास परम उत्साह हृदय भरि ॥ ४ ॥
नृप कुमार मन हरन चरित अमृत मय जिनके ।
रास रसिक शिरमौर रमत सुर गन सँग तिनके ॥ ५ ॥
सरस रास रस मानि अधिक लघु लगत अमर पुर ।
तिरस्कार करि स्वर्ग सुमन वर्षत प्रभु पर सुर ॥ ६ ॥
लखि सुरास मन मुदित देव ऋषि नारद आये ।
बहु गन्धर्व कुमार सुभग अपने सँग लाये ॥ ७ ॥
पूजन सौंज अनेक भाँति सजि जहँ रसिकेशा ।
करत कलित रस रास अमल अनुपम सर्वेशा ॥ ८ ॥
परब्रह्म पर तत्त्व कोशलाधीश कुमारा ।
अखिल जगत आधार सकल शुभ गुण आगारा ॥ ६ ॥
तहँ नव नेह नवीन वयस नख सिख छबिधारी ।
नवल अमल श्रृंगार सरस अद्भुत सुकुमारी ॥१०॥
प्रीतम प्रेम परतत्त्व पगीं रस रास उपासी ।
मुनिवर रचि तिय वेष गये जहँ विशद विलासी ॥११॥
सब गन्धर्व कुमार विरचि प्रमदा वर वेशा ।
आये निज गुन गर्व सहित जहँ लसत रसेशा ॥१२॥
यद्यपि सब गन्धर्व कुँवर अद्भुत छवि धारी ।
तदपि सकल रघुवीर सखा शोभित अति भारी ॥१३॥

जिमि मरकत मणि निकट काँच शोभा नहिं पावति ।
तिमि प्रभु सखन समक्ष अपर उपमा न सुफावति ॥१४॥
रघुनन्दन गुण सकल सखन में लसत निरन्तर ।
प्रभु से सदा अभेद भेद किन्चित नहिं अन्तर ॥१५॥
रघुपति आश्रित सखा वृन्द शुभ गुण आगारा ।
याते इन सम या विशेष नहिं देव कुमारा ॥१६॥
निज चतुरता सुगान कला कोशल हर्षाई ।
नृत्य वाद्य बहु भाँति कृपाकर तिन ह सिखाई ॥१७॥
चहुँदिशि ते गन्धर्व कुँवर निज कला दिखावत ।
हाव भाव रस रंग रँगे उत्साह बढ़ावत ॥१८॥
जिमि सागर में सुरन मन्दराचल गिरि डारी ।
करि मन्थन मन मुदित लियो सुठि सुधा निकारी ॥१९॥
तिमि गन्धर्व सुकला रूप सुखमय रस सागर ।
रघुनन्दन मथि काढ़ि लेत रस रास उजागर ॥२०॥
निज प्रिय परिकर वृन्द कृपा करि तिनहिं पियावत ।
चक्रवर्ति नृप तनय विविध गुण गण दर्शावत ॥२१॥
भूमिपाल सुर इन्द्र माहिं सबसे गुण आगर ।
श्री दशरथ महिपाल तस्य सुत रूप उजागर ॥२२॥
सकल सुपरिकर नयन हृदय करि मथन रसिकवर ।
करत परम रसरास सरस आनन्द हृदय भर ॥२३॥
निज चातुरी रचाय कला अद्भुत विस्तारी ।
हाव भाव रस सिन्धु मगन श्री रास बिहारी ॥२४॥

परिकर प्रेम विभोर लखत मुख कंज एक रस।
पावत परमानन्द पगे रस सिन्धु भये बस ॥२५॥
मुख मयंक माधुरी मगन सब सखा समाजा।
ऊर्ध्वश्वाँस अँग शिथिल कहत गुण लागत लाजा ॥२६॥
हैं हम सब सर्वदा वाम निश्चय मन धारो।
भूल्यो पुरुषा वेष कान्ता भाव सँभारो ॥२७॥
जे अज्ञानी बँधे विषम माया के जाला।
रघुवर रास विहीन दोष दइहैं तत्काला ॥२८॥
पर ज्ञानी गुन वान सरल सज्जन समुदाई।
उचित समुझि नहिं दोष देहिं गे करत बड़ाई ॥२९॥
परतम परम परेश ब्रह्म व्यापक रघुनन्दन।
भक्त वछल मन रमन सतत परिकर अनुरन्जन ॥३०॥
उन प्रमदन उरमाहिं सकलनायिका भाव बर।
रस स्वादन रसक्रिया विसद लीला दीनी भर ॥३१॥
होन लगी स्फुरित हृदय में अनुपम लीला।
परिकर युत रसिकेश हृदय सुख बर्धन शीला ॥३२॥
प्रीतम प्रेम विमुग्ध लसत चहुँ ओर सखीगन।
दृढ़ता युत निज करन गहे प्रीतम कर मुद मन ॥३३॥
रूपमाधुरी सिन्धुमगन दृगपलक न डारत।
क्षणभरहोन न चहत अलग प्रियवैन उचारत ॥३४॥
हे प्राणेशउदार रमणरसरंजन मनहर।
ममअँग में सन्ताप अमित प्रगटेउ हृदयेश्वर ॥३५॥

यद्यपि मलय कपूर आदि लेपन हम कीने ।
तदपि बढ़त सन्ताप व्यथा झीनी हियलीने ॥३६॥
केवल प्राण अधार पाय तव प्रिय आलिंगन ।
होत परम सन्तोष हृदय उपजत सुख अंगन ॥३७॥
अतः आपको अंगसंग सुखदायक हमको ।
करके कृपा अपार समर्पण कीजै सबको ॥३८॥
सुनितिनके प्रियवैन हँसतअति मधुर रसिकवर ।
चंचल चपल चलाक चखनचित चोरतमनहर ॥३९॥
कोई प्रेमावेश कहत हे प्राण अधारे ।
मैंने पृथमहिं कठिन सुव्रत बहु भाँति सँवारे ॥४०॥
तेहिव्रत के फलरूप मिले मोहिं अवधविहारी ।
प्रेम सहित जयमाल रावरे गल हमडारी ॥४१॥
अब कीजै ममपाणि ग्रहण रसिकेशउदारा ।
दीजै अंग सुसंग प्राण तन मन हम वारा ॥४२॥
विकीं रावरे हाथ विना गथहे सुकुमारे ।
रमि रमाय मम संग लेहु सुख प्राण अधारे ॥४३॥
यहिविधि निज अभिलाष विविधविधिसकल सुनावैं ।
हृदय हरन मन रमन निरखि नव नेह बढ़ावैं ॥४४॥
सब दिसि ते सब घेरि रमत रसिकन मन रंजन ।
जिमि तारन में लसत विमल विधु सुख रस कंदन ॥४५॥
अथवा मणिगण मध्य महाँमणि शोभित जैसे ।
राजत सुषमा सदन मदन मद हर पिय तैसे ॥४६॥

जिमि सब रसन मझार लसत शृंगार अमलरस।
तिमि बहु परिकर मध्य राजनन्दन अनुपम लस ॥४७॥
पुनि सज्जन सुख कन्द द्वन्द हर श्री रघुनन्दन।
सुधा सरिस मैरेय लियो करमें भव भंजन ॥४८॥
निजकर सरवन पियाय प्रेम युत श्री रसिकेश्वर।
पायो परम प्रमोद हृदय में श्री अवधेश्वर ॥४९॥
पुनि तिनने अनुराग सहित रस सिन्धु मगन मन।
निज कर प्रभुहिं पियाय स्वबस कीने आनँदघन ॥५०॥
स्वजन सुखद प्रभु सतत अमल अनुराग प्रदायक।
करुणासिन्धु उदार रमन रस निधि सब लायक ॥५१॥
करत सरस सुखरास सुखी करि परिकर वृन्दन।
देवत दिव्य सनेह स्वाद अह्लाद सुरंजन ॥५२॥
पी मादक मन मत्त भईं सब सखी समाजा।
मगन रास रस सिन्धु गईं तन की सब लाजा ॥५३॥
वदत विमल बर बैन चैन प्रद सकल नागरी।
सुख सुषमा रस खानि सकल शुभ गुण उजागरी ॥५४॥
नृप किशोर चित चोर सतत सज्जन सुखकारी।
यह उदार बरबानि भेद जानत अधिकारी ॥५५॥
हम सबके सँग रमत देत सुख स्वाद अनूपम।
अस कहि कामिनि काम केलि बस रसस्वरूपम ॥५६॥
पियकी ललित विशाल भुजा अपने गल डारी।
विमलवदन विधुलखतहृदय सुखलहतअपारी ॥५७॥

रूपमाधुरीसिन्धु मगन कोइ कलाप्रवीनी ।
प्रीतम प्रीति प्रधानपगी अतिसय रसभीनी ॥५८॥
कोइ कामिनि सर्वत्र प्राण जीवन छवि निरखनि ।
परमानन्द प्रमोदपगी अपने मन हर्षनि ॥५९॥
कोइ सखि प्रेम विभोर प्राणवल्लभ पदकंजन ।
पुनि-पुनि धरिनिजशीश विनययुत करि बहुवन्दन ॥६०॥
हे प्रीतम चितचोर सदा हम तव पद दासी ।
कियो आपने वरण हमहिं हे प्रेम प्रकाशी ॥६१॥
प्रभु आज्ञा शिर धारि सतत पद रज सेवैंगी ।
रूप माधुरी निरखि मगन हिय सुख लेवैंगी ॥६२॥
को हमरे पितुमातु कौन हम कँहसे आये ।
कँह हमरे कुल बन्धु वचन बहु भाँति सुनाये ॥६३॥
मनमोहन हे श्याम सुन्दर आरति हर स्वामी ।
सुरनर वन्दित चरण नाथ शतकोटि नमामी ॥६४॥
हम सब अवला सकल जगत में और न जानत ।
सब कुछ जीवन प्राणनाथ आपहि को मानत ॥६५॥
उत्कन्ठा अति प्रबल सतत तुमसे मम लागी ।
केवल प्रभु पद कंज मंजु रस में मति पागी ॥६६॥
हृदय रमण रसिकेश प्राण जीवन धन प्यारे ।
सुनिये कृपानिधान प्राण वल्लभ सुकुमारे ॥६७॥
हम सबको सम्बन्ध सनातन प्रभु सँग माहीं ।
ब्रह्मा ने नहिं कीन पाय जो काल नसाहीं ॥६८॥

याते हे मनरमण सतत तुम प्रीतम मेरे ।
हौं तव भोग्या रहहुं सदा पद पंकज नेरे ।।६९।।
यहि विधि प्रभु निज सखन संग अतिसय अनुरागे ।
ते सब मोद विनोद भरे प्रेमामृत पागे ।।७०।।
देतपरम आनन्द देहकी सुरति भुलाये ।
निरखि नेह रघुराज राजनन्दन हर्षाये ।।७१।।
सजल जलद तनश्याम कान्ति कमनीय सुहावन ।
करत निगमनित गान सतत सज्जन मनभावन ।।७२।।
उन सबसे अतिप्रेम सहित बोले नवनागर ।
करुणासिन्धु उदार हृदय मृदु चित रससागर ।।७३।।
हे सब सखा समाज आप प्रिय बन्धु हमारे ।
सज्जन सदा अभिन्न रूप मोसे नहिं न्यारे ।।७४।।
इस सुख की मन माहिं करोगे तुम सब आशा ।
तब तब यह रस रास अमल तव हृदय प्रकाशा ।।७५।।
विश्व रमयिता सरस सुखद विग्रह रमणीया ।
राज कुँवर अति सुघर सकल नारिन सुखदीया ।।७६।।
विविधि भाँति करि रमण रास लीला रघुनन्दन ।
कीनो सबहिं प्रसन्न निखिल परिकरमन रंजन ।।७७।।
धरि बहुरूप अनूप सकल प्रमदन सँग माहीं ।
करत सरस रस रास राज नन्दन हर्षाहीं ।।७८।।
याते सब नायिका लखैं प्रीतम को निजबस ।
करत प्यार प्रिय अधिक सतत मोहिं पर रँगि मम रस ।।७९।।

याते निज दृग प्राणनाथ तन माहिं लगाई ।
निरखत एक टक सुछबि सदा नहिं पलक गिराई ॥८०॥
पलकहु अन्तर परत होत हिय व्याकुलता अति ।
जिमि मछली जल त्यागि जियै कुछ छण रहे तड़पति ॥८१॥
पृथक–पृथक सब सखी मनोहर पिय गुण गावें ।
विपुल रागिनी राग सहित बहु वाद्य बजावें ॥८२॥
व्यापक ब्रह्म निरीह सर्व सामर्थ गुणाकर ।
लहि तिन से सम्मान भये प्रसन्न सुषमाकर ॥८३॥
प्रेमवती सब वाम स्वकर गहि प्राणनाथकर ।
सुरतरु में जनु लसहिं लतालोनी अद्भुत वर ॥८४॥
रतिरस लम्पट लाल सकल नायक मणि नागर ।
श्री दशस्यन्दन सुवन भुवन भूषन रस सागर ॥८५॥
सुरतरु डारन माहिं नाग मुक्ता गजेन्द्र मनि ।
इन्द्रनील मणि आदि सहित झूलन सजाय पुनि ॥८६॥
निजकर कंज झुलाय झूलि झुकि झमि नैनसर ।
मारि कटाछन करत प्यार रस बस सनेह घर ॥८७॥
तेहि विधि सिगरीं बाल पगीं प्रीतम सनेह रस ।
झूलन में पधराय प्राणनाथहिं गावहिं जस ॥८८॥
अनुपम राग रसाल सखी सब कोकिल वैनी ।
नैन सैन संकेत सहित पिय उर सुख दैनी ॥८९॥
करहिं प्यार बहु भांति सकल नख सिख सुकुमारी ।
रमणीया सब परम प्रेम रस रूप उजारी ॥९०॥

रचि रचना अति अमल विविधि विधि सकल नागरी ।
लीने कर सुठि स्वच्छ चत्र छवि निधि उजागरी ॥९१॥
कोइ दर्पण कोइ चँवर चारु सुचि बसन सुभपन ।
सेवा सौज अपार लिये सबविधि हत दूपन ॥९२॥
पूजनहित रघुवंश हंस अवतंश ज्ञान घन ।
राम सच्चिदानन्द प्रेम रस निधि उदारमन ॥९३॥
अमित रमा रति उमा सतत पूजित वैदेही ।
तिनके जीवन प्राणनाथ सब भाँति सनेही ॥९४॥
सुचि सुगन्ध मलि अंग उपटि स्नान करावें ।
पुनि सुठि भूषन बसन नवल शृंगार सजावें ॥९५॥
सिंहासन पधराय पूजि करि प्यार सुमुद भरि ।
निज भावनानुसार सकल भेंटी पायन परि ॥९६॥
अमित रूप धरि सकल सखिन सुख स्वाद कराई ।
सुमन सेंज सुचि सरस सैन कीने रघुराई ॥९७॥
उमारमा रति रूप विनिन्दक सकल कुमारी ।
गुणागार सुचिशील सहित अनुपम छवि धारी ॥९८॥
लज्जा युत मुख चन्द्र चमक चारों दिशि छाई ।
कामातुर कामिनी काम कौतुक प्रगटाई ॥९९॥
हाव भाव बहु भाँति नैन सर मारि परस्पर ।
आलिंगन करि हरषि अधर रस पियत प्रेम भर ॥१००॥

दो०–अनुपम सुन्दर सखिन सँग, रमत रसिक शिरताज ।
पियत परस्पर प्रेम रस, त्यागि सकुच भय लाज ॥४॥

चूमत अमल कपोल ललकि हिय हार बनाई।
निरखत नूतन नेह नयन सों नयन मिलाई ॥ १ ॥
मन्द मन्द हँसि हेरि करत मृदु मधुर बतकही।
कर गहि कण्ठ लगाय प्रीति रस बस करि सही ॥ २ ॥
यहि विधि विपुल विनोद करत सब सुभग नवेली।
पगीं परस सुख स्वाद भाव भरि सकल सहेली ॥ ३ ॥
अनुपम रस अनुभवत हृदय में सब सुकुमारी।
पर सर्वदा विकार हीन बिलसत धनु धारी ॥ ४ ॥
किंचित नहीं विकार भयो रघुवर तन माहीं।
सतचित् आनंद रूप एक रस लसत सदाहीं ॥ ५ ॥
परब्रह्म पर तत्व परम सामर्थ दिखाई।
रति रस लंपट लाल सखिन रस सिन्धु डुबाई ॥ ६ ॥
कमल लोचनी नारि प्रेम युत प्राण नाथ पद।
कुंकुम हरि चन्दन अनूप चर्चित सनेह सद ॥ ७ ॥
राजिव लोचन राज कुँवर वक्षस्थल माहीं।
नवल नायिका नेह भरी अनुलेपत अहहीं ॥ ८ ॥
कबहुँ विपुल नागरी करहिं श्रृंगार सुहावन।
परम प्रवीण सुभाय प्राण जीवन मनभावन ॥ ९ ॥
ले वीणा कर कंज मंजु स्वर सप्त उचारें।
मूर्छनादि ग्रामादि सकल गुण पूर्ण निहारें ॥१०॥
वीणा ललित बजाय रिझावहिं श्री रघुवर को।
उत्कण्ठा स्वर सुनन हेत अति मृदु छबिधर को ॥ ११ ॥

यद्यपि सुर गन्धर्व तियन से परम प्रवीनी ।
गान कला कल कुशल रसिक लम्पट रस भीनी ॥१२॥
तदपि प्राणधन प्रीतिपगीं मुख कंज निहारैं ।
सुनि स्वर मधुर रसाल हर्षि निज तन मन वारैं ॥१३॥
अखिल लोक में गानकला मधि परम विसारद ।
रघुनन्दन रति रमन भनत महिमा श्रुति पारद ॥१४॥
सर्व मनोरथ दानि खानि सुख रस की रघुवर ।
परम रम्य करि गान श्रमित हो परिकर मनहर ॥१५॥
सुमन सेज सुचि सरस समन श्रम सुखद सोहावन ।
शैन करत कमनीय केलि कौतुक सरसावन ॥१६॥
पुनि बीते कछु काल जगे जग जीवन दाता ।
सुन्दर सुखद सुजान सतत सेवक जन त्राता ॥१७॥
उठि बैठे हर्षाय सेज पर राज दुलारे ।
कोइ सहचरि मणि जड़ित पादुका धरत सँवारे ॥१८॥
कोइ विधु बदनी स्वर्ण सूत्र मणि जड़ित मनोहर ।
जूती लाड़ लड़ाय धरी सन्मुखमन मुद भर ॥१६॥
अपर नायिका भाव सहित सब रुचि अनुसारी ।
सेवत चरण सरोज हृदय पावत सुख भारी ॥२०॥
बदत व्यास वर बैन विमल हिय करि अनुमाना ।
सर्व भाव तोषक रसेश रघुवीर सुजाना ॥२१॥
इन सखियन पर भये अधिक प्रसन्न रघुराई ।
सखा रूप में कबहुँ न ऐसी प्रीति जनाई ॥२२॥

जैसो आज अनूप अमल व्यवहार बढ़ायो।
पुरुष रूप में कदा नहीं इन सब ने पायो ॥२३॥
याते विमल बिचार वान विद्वान सयाने।
अंगीकार सनेह सहित यहि भाव समाने ॥२४॥
प्रभु आकर्षण होत यथा बनिता तन माहीं।
पूरण सब अभिलाष होइ दूसर तन नाहीं ॥२५॥
प्रेमाद्वैत अभिन्न भाव बनिता तन होई।
अपर देह नहिं होत करै कोटिन विधि कोई ॥२६॥
जो सुख स्वाद अनप लहत वनिता प्रभुपाई।
सो सुख "सीताशरण" पुरुष तन में नहिं लहई ॥२७॥
कटि मणि सूत्र सोहात बाहु भूपित मणि कंकण।
चन्द्र कान्ति सकुचात हार हिय बिच करि धारण ॥२८॥
नाशा मणि मन हरन मणिन कण्ठामन भावन।
धारण कीन्हों कण्डमाहिं कुण्डल सुठि कानन ॥२९॥
चूमत अमल कपोल परम प्रतिभा प्रगटावत।
उज्वल मधुर प्रकाश निरखि रवि शशि सकुचावत ॥३०॥
कर अंकण कमनीय मुद्रिका मणिन सँवारी।
शोभित अंगुरिन माहिं चन्द्र जनु किरन पसारी ॥३१॥
चकमदार छबिदार सुभग पगड़ी शिर सोहत।
कलँगी कलित कलोल करति लखि लखिमन मोहत ॥३२॥
मुक्तन लरी अनूप लगीं सुठि पेंच बनाई।
मोहि रहीं सब बाल पाग की निरखि निकाई ॥३३॥

स्वर्ण रत्न मणि जड़ित सुभग पनहीं पग धारे।
हीरा मणिन जड़ाय छरी कर कंज सँवारे ॥३४॥
कंचुक पीत सु ललित अमल अँग माहिं सजाई।
छिटकत छटा अपार विपिन विहरत रघुराई ॥३५॥
रूप अनूप अपार मार मद मथन सुभग तर।
"सीताशरण" अधार प्राण वल्लभ सनेह घर ॥३६॥
सँग निज प्राण समान प्रिया नायिका नवेली।
निरखत बाग बराह विपुल सहचरी सहेली ॥३७॥
उन सबके सँग विपिन बिहरि लौटे रघुनन्दन।
सुमन सुमण्डप मध्य लसत परिकर मन रंजन ॥३८॥
सरस सुगन्धी छाय रही चहुँ ओर अनूपम।
मनहुँ अमल रसराज लसत धरि नवल स्वरूपम ॥३९॥
परम प्रेमरस पगींसकल प्रमदा समुदाई।
नम्रभाव सें करन लगीं सेवा सुख पाई ॥४०॥
सौज अनूप अपार लिये सब राजकुमारी।
निज-निज रुचि अनुसार सु सेवा सौज सँवारी ॥४१॥
मातु कौशिला समय जानि भोजन पठवायो।
भोज्य भक्ष चोष्यादि चतुर्विधि जो श्रुति गायो ॥४२॥
व्यंजन अमित प्रकार स्वाद अद्भुत प्रिय पावन।
तुष्टि-पुष्टि अति सुखद निरामय सुरुचि बढ़ावन ॥४३॥
प्रीतम प्रीत प्रतीत पगे निज प्रियन पवावत।
करत प्रसंसा भूरि स्वकर पवाइ सुख पावत ॥४४॥

तिमि नागरी नवीन नवल नागर नव नेही ।
पियहिं पवावत प्रेम पगीं लखि परम सनेही ॥४५॥
निज निज करन पवायप्यार छकि छकि सखिसारी ।
ग्रास देत कर चमि लेत पिय सखि बलिहारी ॥४६॥
यहि विधि चतुर्प्रकार अन्न सुचि सुधासार सो ।
सुख आसन आसीन नवल नागर सुप्यार सो ॥४७॥
ललित कदलि के पत्र ताहि पर धरि बहु व्यंजन ।
निजकर प्रियन पवाय मोद पावत रघुनन्दन ॥४८॥
बहुरि आचमन कीन सकल नवलन युत रघुवर ।
पायो सुठि ताम्बूल सुगन्धित प्रमुदित मनहर ॥४९॥
सब नायिकन पवाय प्यार बहु भाँति दिखायो ।
परम प्रेमरस पगे अतर वर घ्रान करायो ॥५०॥
प्रियन करायो घ्रान अतर प्रियतम को मुदभर ।
रूप माधुरी मगन एक टक पलक नहीं गिर ॥५१॥
नवल नागरी नेह भरीं प्रीतम रस पागीं ।
पूँछत पियसो प्रहेलिका अतिसय अनुरागीं ।५२॥
करत केलि कमनीय नवल नायक रघुनन्दन ।
देत प्रियन सुख स्वाद बिबिधविधि जन मन रंजन ।५३॥
पलक गिरत अरु उठत भृष्टि लय होत सदाई ।
ऐसो काल महान खेल में देत बिताई ।५४।
कहुँ कोमल कमनीय कमल दल सैया विरचित ।
ललित भूमि तल अमल सखिन सँग बैठत प्रमुदित ।५५॥

बदत विमल वर नैन नवल विधु वदन निहारी ।
रास अमित तुम सकल सैन कीजै सब प्यारी ॥५६॥
प्राणहुँ ते प्रिय पिता वृद्ध मेरे हितकारी ।
मोहिं बुलावन हेत दूत पठये दोइ चारी ॥५७॥
वे मेरे भगवान सतत आज्ञा शिर धारौं ।
प्रात होत ढिग जाय युगल पद कंज निहारौं ॥५८॥
पितु निदेश नहिं टारि सकौं सुनिये सब बाला ।
शैन करहु पुनि प्रात जाइहो भवन रसाला ॥५९॥
तुम सब निजघर जाहु सुनत मृदु रसमय बानी ।
सकल नवल नागरी ठुठुकि रहि गईं सुखानी ॥६०॥
मानहुँ प्रबल तुषार परत बहुलता ललामा ।
गिरीं भूमि मुर्छाय गयो हिय को अभिरामा ॥६१॥
बहुरि होश जब भयो खेद बस सब पिक बैनी ।
चंचलताचित भई चपलता युत मृग नैनी ॥६२॥
सोचहिं मम सुख दूरि करन हित श्री रसिकेश्वर ।
बोलत पिय गृह जासु प्राण वल्लभ हृदयेश्वर ।६३॥
वंचित यह सुख होत प्राण तनमें न रहेंगे ।
विरहानल अति प्रबल सतत हम सकल सहेंगे ॥६४॥
यहि विधि निजमन माहिं सोचि मिलकर सबबाला ।
बोलीं बचन सनेह सहित प्रिय मधुर रसाला ॥६५॥
अहो परम आश्चर्य सुनहु हे प्राणनाथ मम ।
जीवन धन मन हरन रसिक रंजन पियूष सम ॥६६॥

हे सब बिधि कल्याण रूप हे प्रेम पात्र वर।
अन्य कौन प्रिय मोहिं कहिय रसिकेश सुघर वर ॥६७॥
जाके हम ढिग जाय सकल कामातुर बाला।
मेटैं कहा मनोज व्यथा कहिये छवि जाला ॥६८॥
अपर होइ यदि नाथ ताहि चलि स्वयं बतावैं।
नतरु चपल चितचोर व्यथा जनि वचन सुनावैं ॥६९॥
सुनत प्रियन के वचन प्रेम युत राजिव नैना।
मधुर सरस प्रिय सुखद प्राण घन बोले बैना ॥७०॥
अच्छा कीजै आज शैन तुम सब मम संगा।
प्रात दिहैं दिखलाय अपर नायक शुभ अंगा ॥७१॥
जाहि पाय पाइहो सकल मिलि प्रेम अपारा।
शंका तजि अब शैन करहु सुनि वचन हमारा ॥७२॥
सुनि प्रिय बैन रसाल सकल प्रमदा हर्षानी।
सोईं प्रीतम संग अंग अंगन लपटानी ॥७३॥
सोचहिं हियमें यही भाँति पिय संग निरन्तर।
करहिं सतत हम रमण परै कबहूँ जनि अन्तर ॥७४॥
यही भाँति मन गुनत भईं निद्रा बस सारी।
तिन को प्रेम प्रशंसि हर्षि सोये धनुधारी ॥७५॥
निशा बिगत शशि प्रभाभई कम भयेउ प्रभाता।
भानु उदयभे मिटेउ तिमिर बिकसे जल जाता ॥७६॥
पक्षी कल रव करत कोकिला अति प्रिय बानी।
सुनि कौशिल्या सुवन जगे प्रभु सारँग पानी ॥७७॥

बोले बैन रसाल मित्र गण हो कल्याना।
जागहु भयेउ प्रभात सुनहु सब सखा सुजाना।।७८।।
लखहु उदय रवि भये सरन विकसे जलजाता।
अब जनि सोवहु सुहृद बृन्द मेरे सुखदाता।।७६।।
जैसे सज्जन मित्र जनन को लेत जगाई।
तुम सब मेरे मित्र उठहु अब निशा सिराई।।८०।।
रहहु सदा निर्विघ्न रूप सुखशान्ति सदाई।
पावहु प्रेम प्रमोद सहित मिलि तुम सब भाई।।८१।।
सुनत मधुर प्रिय वचन सरस मनहर सुखदाई।
जागे सकल विनोद भरे प्रभु पद शिर नाई।।८२।।
अरुण कमल दल सरिस अमल लोचन मन हारी।
हम सब राजकुमार चेतना पाय निहारी।।८३।।
श्री रघुवर छवि निरखि प्रेम सों गिरा उचारी।
आज रात एक स्वप्न लखेउ हम सब भै नारी।।८४।।
प्रीतम प्राण अधार आप हम सबके नायक।
कीन्हों विपुल विहार संग में हे सब लायक।।८५।।
हम सब लज्जा छोड़ि गाढ़ स्नेह सँवारी।
कियो अमित सुख रास रंग कौतुक बिस्तारी।।८६।।
दियो विपुल सुख स्वाद आपने हमहिं कृपाला।
वाहि सुरति करि चहत सतत मन रासरसाला।।८७।।
सुनि ऐसे वर बैन सखन के श्री रघुराई।
मन्द मधुर मृदु हास्य युक्त बोले हर्षाई।।८८।।

करि कछु कलित कटाक्ष केश कुंचित मुख ऊपर।
बदत बचन वागीश बिमल विधिलजत सुनतस्वर ॥८९॥
सुनहु सखा समुदाय सुकृत साली सब भाई।
भाग्यवान को स्वप्न माहिं भी सुख अधिकाई ॥९०॥
उत्तम सुख नित लहत स्वजन मम पद अनुरागी।
दुरात्मा दुख पावत नित जे परम अभागी ॥९१॥
स्वर्ग भूमि अरु काल कर्म कर्त्ता सब माहीं।
लखहिं यदपि आश्चर्य तदपि अचरज कछुनाहीं ॥९२॥
सुनहु स्वप्न सो धन्य जगै तब प्रिय मुख देखे।
जस देखेउ तुम स्वप्न सत्य करि इनको लेखे ॥९३॥
यहि विधि गूढ़ रहस्य युक्त कहि बचन रसिक वर।
चक्रवर्ति नृप सुवन सखन युत परम हर्ष भर ॥९४॥
राजमहल की ओर चले पालकी मनोहर।
तापर चढ़ि प्रभु गमन कीन रघुकुल मणि रघुवर ॥९५॥
बोले सूत सुजान सुनहु शौनक आदिक मुनि।
यह रहस्य रमणीय मनोहर सतत हृदय गुनि ॥९६॥
मनोरमा तट निकट मनोरम कानन पावन।
यह शुचि रास बिलास कियो रसिकन मन भावन ॥९७॥
शुक सनकादिक अपर महाँमुनि वर बिज्ञानी।
अनुभव हियमें करत सतत यह रस सुख खानी ॥९८॥
शिव ब्रह्मादिक देव सदा यह रस हिय ध्यावें।
भूलि जगत को भान महाँ रस सिन्धु समावें ॥९९॥

याते अब सब आप सदा यहि रस हिय ध्यावो ।
आदर युत रघुबीर कृपा से रति रस पावो ॥१००॥

दो०—जो रस ध्यावत शम्भु अज, शुक नारद सनकादि ।
आपहु सब यामें रमहु, यह रस अमल अनादि ॥५॥

जयति रसिक रस दानि रास रस मण्डन मनहर ।
जयति सरस सुकुमार सरल सुषमा कर रघुवर ॥ १ ॥

जयति सनेही शुद्ध भाव ग्राहक रसेश जय ।
जयति अमल आनन्द कन्द मुद भर परेश जय ॥ २ ॥

जय जय प्रीतम प्रीति पगे प्रेमिन मन रंजन ।
जय जय परम उदार प्यार वर्धन भव भंजन ॥ ३ ॥

जयति जयति रस रूप प्रेम रस लम्पट जय जय ।
जयति जयति महिभप प्रीतिरस बस नित जयजय ॥ ४ ॥

जय जीवन धन रसिक प्राण वल्लभ रसरासी ।
"सीताशरण" अधार प्यार वर्धक अविनासी ॥ ५ ॥

जयति रसिक रसदानि स्वजन मन आनँद कारी ।
"सीताशरण" स्वभाव शील पर हौं बलिहारी ॥ ६ ॥

यहि विधि कहि जय जयति सूत मुनि परम रसाला ।
मगन भये प्रभु ध्यान फसेउमन अति छविजाला ॥ ७ ॥

लागी सरस समाधि हृदय उमगेउ रस सागर।
पुलकांकित तनभये निरखि हिय बिच नव नागर ॥ ८ ॥

दो०–जय रघुनन्दन मन रमन, रसिकन प्राणाधार।
"सीताशरण" सनेह निधि, नटवर राज कुमार ॥१॥

इति श्री मति बृहत्कौशलखण्डे ब्रह्मरामायणान्तर्गते
श्रीमद्व्यास कृते श्रीसूत सौनक सम्बादे श्रीराम
रास विलासे सीताशरण सुमति प्रकाशे
सखारास प्रकरणोनाम प्रथमोऽध्याय:

सम्पूर्णमस्तु

द्वितीयोऽध्याय:

गोप कुमारिका रास प्रकरणम्

* श्री वेद व्यास उवाच *

रोला छन्द:—

बदत विमल वर बचन व्यास उत्तम रघुवर यस।
अति रहस्य रमणीय विषय नाशक अनूप रस ॥ १ ॥
सुनत श्रवण सुख श्रवत सतत सज्जन मन भावन।
पीवत परम पवित्र हृदय अतिसय प्रिय पावन ॥ २ ॥
जिनको हियअपवित्र चरित यह श्रवण न करहीं।
करि करि कोटि कुतर्क अमित शंका मन धरहीं ॥ ३ ॥
सज्जन सुनत सनेह सहित सन्तोष न मानत।
परम रहस्य चरित्र वाहि निज सर्वस जानत ॥ ४ ॥